

॥ १०१८०१ ॥

①

॥ श्रीरामविजयग्रंथः ॥ चत्वारिंशत्तिसोऽध्यायप्रारंभः ॥



श्रीरामा ।
॥३॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जयनिगमागतुबरिवला ॥ रुदारवृजितविमला ॥ असुररवकहारणापरमंगका ॥ अचकव
 ठकवविनाशा ॥ १ ॥ मन्मथवारणविदारणमुगद्रा ॥ छोधजलविदारकसमिरा ॥ महतमनाशकभास्करा ॥ परासुरापर
 मानंदा ॥ २ ॥ मठुरत्तणविदारकवैश्वान्नरा ॥ प्रायाचक्रवाककविश्वंभरा ॥ दंमनगछेदकवज्रधरा ॥ सौमिवराम
 वनाशना ॥ ३ ॥ अहंदिपचवहनमुखदर्पहारणा ॥ मोहोद्यतक्रोत्रसंकारणा ॥ शोकशक्रजितविदारणा ॥ उ
 न्मिकाश्रजाश्रीरामा ॥ ४ ॥ तवक्षेपमाबेकं सुमत्ता ॥ सपत्नबालारामविजयग्रंथ ॥ शर्वटिंचाजाध्यायरस ॥ विजय
 भरिता ॥ वदविकैसजिकेतो ॥ ५ ॥ गतकथाव्याईजिरापमा ॥ संपलेलहुकुशाचेबास्मान ॥ जानकिबाणे ॥ ६ ॥
 जियायत ॥ अश्वमेधसंपविला ॥ ७ ॥ याउपरियदेद्विनि ॥ सिंहासनिवैसलाकेदंडपाणि ॥ बंधुवर्गकर
 जोडुनि ॥ स्वस्थानिउभेवसति ॥ ८ ॥ नोद्यतांतमगिनितरवाशि ॥ दिजप्रजापातमावेगेशि ॥ जैसेसुर
 हिरसागराशि ॥ मरुतेसंगोपातले ॥ ९ ॥ तेमकजनसमाशुषिता ॥ मुक्तमंडपिवैसलारधुनाथा ॥ जोकेदि
 कंदर्पचाताम ॥ दिनबंधुगुणशिंधु ॥ १० ॥ इतजाणवितिरधुराया ॥ प्रजाजननालेमेयवया ॥ पुठंयास्यणेनवतास्या ॥

2A

कौण्डिपिडिआप्रसियाप्रजा ॥ १० ॥ तौमुक्तमंडपासमोरा ॥ पातलेतेकोप्रजेचेभार ॥ कृतनियोजयजयकार ॥ नमस्का
 रतेकाथलिलि ॥ ११ ॥ उभेगकलेसमोरा ॥ ससंकेतविचारिजगदोधार ॥ अणितियमुनेचेतिरिधुरा ॥ लवणासुर
 मंजला ॥ १२ ॥ माहांपातकिबतिनिधुर ॥ दुरादेवाचानोकुमर ॥ मानुजेचेपैलतिरा ॥ तैयेजसुरजससदा ॥ १३ ॥
 प्रजागईबाणिब्राह्मण ॥ चांजळभाहितेनिययेउना ॥ रुरायातयशिवधुन ॥ समसजनसुरविकरावे ॥ १४ ॥
 जैसेजेकताकोदंडयाणि ॥ कोदंडभायाचिनतनाणि ॥ असनाउदेतिनयनि ॥ लोघमनिनसांवेरे ॥ १५ ॥ तोशत्रु
 छपुदेयउनि ॥ मस्तकचरणितेउनि ॥ अणमजनासादेजेयेक्षणि ॥ लवणासुरकथावया ॥ १६ ॥ येननियो
 चादुरंगदक ॥ जांयवेगंअणेतमालनिक ॥ लवणासुरताकाक ॥ प्रजासुरिवरहीजे ॥ १७ ॥ मंत्रशक्तिदेव
 बाण ॥ बंधुसहितरघुनंदना ॥ शलाघवाचेवंदुनेचरण ॥ विरशत्रुछवलिला ॥ १८ ॥ संग्रामसंकेतमोरा ॥ शेव
 किंवेकिआलयवसरि ॥ तिनजसोपिदकबाहिर ॥ परमवेगंनिचाले ॥ १९ ॥ नौकाबाणेनिबपारा ॥ मानुजेचे
 लोघलेतिरा ॥ तोचहुकडेनिबपारा ॥ ऋषेश्वरपातले ॥ २० ॥ ऋषिअणतिहृदसदासण ॥ पुर्विमांघातराजयाशिमारन ॥

30A

मगक्रोधानकादारण ॥ अणेतुं मनुष्याचानंदन ॥ तुजमसकनअयोध्यापहन ॥ क्षणमात्रेधेईनजातां ॥ ३२ ॥ माझामा
 तुकरावण ॥ रामेमारितीकूपटंकरन ॥ तरियाराधवाशिवधुन ॥ शिताभिणिनबकेचि ॥ ३३ ॥ तुमंचौघांसहि
 मारन ॥ मतुकाचासुडेईन ॥ अजिप्रथमभवदान ॥ तुंसेकरिनशत्रुघ्ना ॥ ३४ ॥ लवणासिखणेशत्रुघ्ना ॥
 मशकालुजयेथेचिविधन ॥ जैसामारावयाभकृपा ॥ उशिक्रां हिनलगेचि ॥ ३५ ॥ वृक्षउपडोनिसवर ॥
 वरेधां विला लवणासुर ॥ तोंशत्रुघ्नेसेपुनियांशरा ॥ वापाविरियोजुनियां ॥ ३६ ॥ तेणेतोवृक्षछेदिला ॥ ज
 सुरंपर्वतभिरबाविला ॥ तोहिकेकेसुतेफोडिला ॥ अणमत्रनलगतां ॥ ३७ ॥ कोट्यानकेटिबाणा ॥ शत्रुघ्ने
 माकठिलेदारण ॥ परितोनमनिचलवण ॥ त्रणवतवाणतयाशि ॥ ३८ ॥ जैसावर्षतसेघना ॥ तैसाटिकितरह
 पाषाण ॥ तेणवाणाविरफोडुन ॥ विरशत्रुघ्नेयाकिले ॥ ३९ ॥ मगशत्रुघ्नेतेवेकां ॥ बाणविचारनकाडिला ॥ जो
 कमकासेनेनिर्मला ॥ मधुकेठमवधालगि ॥ ४० ॥ विधिनतेबाणतलता ॥ रघुपतिसदिघलाहोता ॥ तोलवण
 वयासनिचला ॥ रामेदिघलाशत्रुघ्ना ॥ ४१ ॥ तोबाणगुणियोजिला ॥ जैशिप्रवटलिदिव्यचपका ॥ तैसा

(4)

श्रीरामा ॥
॥३॥

चापापासुनमुटला ॥ वेगेंबालालवणावरि ॥ ४२ ॥ तेणेडकमकिलेंमंडक ॥ देवांशिविमनिसुटलापक ॥ वज्रें
चुणहोयबचक ॥ तैसाहृदईमेदला ॥ ४३ ॥ तैसवननपडेबैरावन ॥ तैसाजालाजसुरदेहपाता ॥ प्राणनिधानेगे
लेवरित ॥ पडलेप्रेतघेरवरि ॥ ४४ ॥ जयपावलाशत्रुघ्न ॥ सुमनेवर्षतिसुरगण ॥ ताकाकमथुरापटण ॥ प्रजा
नियेउनप्रारियेले ॥ ४५ ॥ जैसंबयोध्यापुरसुंदर ॥ तैसविजाथिजेमथुरानगर ॥ देशभरलासमया ॥ दुःखह
रिद्रपकालें ॥ ४६ ॥ जयपावलाशत्रुघ्न ॥ ककलेरघोसमावेवतमान ॥ छत्रचामराहिसंपुर्ण ॥ राजचिन्हंपा
उविलि ॥ ४७ ॥ शत्रुघ्नावरिधरविलेखत्र ॥ केलामथुरानपवर ॥ समुद्रपथेतसमया ॥ देशतयशिदिघला
॥ ४८ ॥ तौअयोध्येमाजितेवके ॥ येकनवलजपुर्वकतका ॥ येकादेशसहस्रवरषेकले ॥ राजतेथिलश्रीरामे ॥ ४९ ॥
रामराजाभाजिसुत्या ॥ कोणाशिनाहिसुत्या ॥ तातेथेयेकब्राह्मणसुता ॥ मरणबकस्मातपावला ॥ ५० ॥ जाले
स्यविद्वतबंधन ॥ सर्वेचपावला मरण ॥ मगीपलयानेठचलेन ॥ राजदारशिबाणिता ॥ ५१ ॥ रचोतमाशि
क्षणब्राह्मण ॥ तुवांकायकेलेदोषाचरण ॥ अककिंवाकपावला मरण ॥ करिंअथलयाचालैकरि ॥ ५२ ॥ ४९ ॥

॥विजय॥
॥३॥

4A

परमचिंताक्षतरधुनाथ॥ तोपावलाब्रह्मसुत॥ शिताधवेवंतांत॥ सांगितलातयाशि॥ ५३॥ नास्त्वस्येजन
 कृज्यापति॥ कोणितपकरितोस्तुद्रजति॥ त्यापापंकरननिश्चित॥ ऋषिकुमरनिमाल॥ ५४॥ तपकरणहोत्रा
 लणवाधर्म॥ इतरांशिसहसाधर्म॥ सरिशुद्रतपकरितांपरम॥ अक्रकिंमुत्यहोयपै॥ ५५॥ बैसेबोलता
 ब्रह्मनंदन॥ रामचिंतिपुष्पकविमान॥ तोतेंसाकाकबाल्यावोन॥ राधवेवंवाहितेस्येविया॥ ५६॥ प्र
 धानसेनासाकाळ॥ वरिजासुदतमालनिष्ठ॥ शोधंनगलापुष्पिमंडळ॥ मुख्यअचककरिनस्थाने॥ ५७॥
 जोजेतपस्विद्रिष्टिपडे॥ तयाकोषयालियाधवपुरे॥ तंवसाबोलण्याकचनककतसे॥ ब्राह्मणत्रेष्टवर्ण
 पै॥ ५८॥ तयाशिराधवेनसुन॥ करितयाचेंपुजुवा॥ याचपरिउर्विसंपुर्ण॥ रधुनंदनशोधित॥ ५९॥ दक्ष
 णपंचशोधितराम॥ तोनिविडद्रमलागलपरम॥ गिरिंकेदरियेकबधम॥ किराततपकरितसे॥ ६०॥ आरं
 भिलसेधुर्प्रयान॥ सयासपुसेजनवृजारमण॥ लणकोणवणवेदकोण॥ तपकिमर्थआरंभिले॥ ६१॥
 तवतोक्षणामिकिरात॥ स्वर्गनिमित्ततपकरित॥ अकतंक्षोभलाज्यानक्रिंता॥ लणहोजाचरलाजधर्म॥ ६२॥

5

॥ श्रीराम ॥

॥ ५१ ॥

ती

वाणनिष्णपरमवपक ॥ छेदिलें त्याचें कुंडनाळ ॥ ते उधरला ताळाक ॥ स्वर्गलोकावता ॥ ६२ ॥ ते विमानिसु
 ननाथ ॥ येउ नरघोतमाशिमिलत ॥ ह्यणवरावधिता किरात ॥ पुरविले मनां रथदेवांचे ॥ ६३ ॥ शितावक्रमरघु
 नंदना ॥ पुराणपुत्रपागुणसंपन्ना ॥ मजकाहिसंगाबाजा ॥ ते सिध्दीपाविका ॥ ६४ ॥ रघुजाय ह्यणें ऋषि नंद
 ना ॥ अयोध्ये शिपावला मरण ॥ तयाशिवावे जवदाना ॥ सहस्रनेयन अवस्यतागे ॥ ६५ ॥ इंद्राने जा शेकरना ॥
 परतला ऋषिपुत्राचा प्राणा ॥ जैसा ग्रामास जाय वीरना ॥ तोयत परलोना धारा ॥ ६६ ॥ बहुतांचे सुलयावेक ॥
 जे होते पुर्विनीमाले ॥ ते इंद्रबापु नदियेले ॥ तें प्रतापच पुर्वेकल ॥ ६७ ॥ उमसिने इंद्रजे जवस्त ॥ ते परतो
 निजेशिंदेल ॥ ते सत्याचे त्यास सुता ॥ अमरदे ॥ ६८ ॥ उमसो इंद्रजे अयोध्यापति ॥ अगस्तिचिया
 काननाप्रति ॥ जातजातासहजगति ॥ वने उपवने विलोकित ॥ ६९ ॥ ते पुढे होन पक्षिये उना ॥ राघवशिधा
 लिले लोदंगणा ॥ ह्यणतिना मुचवादिनिवडुना ॥ पुढे जाये राजेद्रा ॥ ७० ॥ ते रघोतमे जे कोना ॥ स्थिरकेले
 विमना ॥ ते उल्काप्रिये दौघे जणा ॥ बोलने जाले ते थवां ॥ ७१ ॥ दिवाभिलबोले वचना ॥ यहुमासे पुर्विहुना ॥

॥ विजय ॥

॥ ४१ ॥

हाभिधमजदवडुन॥बकेचीतेथेनांदेतो॥७३॥ग्रिधमगवचनबोलत॥उमेचकेपडितोदिवामित॥अहमाशेअसे
 येथार्थ॥बहुतकाकयेथेचि॥७४॥प्रधानअणनिशितावरा॥यांच्यावादाचानिवाडाकरा॥सत्वरजावेनिजमंदि
 रा॥तस्विंसार्थकबामुचें॥७५॥तोग्रिधबोलेपापमति॥जैयेथेपुखिनवति॥तैदृष्टावरिनिश्चीति॥निवेडमा
 सेनिमित्तें॥७६॥दिवामितबोलवचन॥ईश्वरपुखिद्वेलेनिर्माण॥मगदृष्टवाढकासंपुण॥मगम्यासद
 नेनिमित्तें॥७७॥प्रधानअणग्रिधसत्य॥बहुककस्यपिष्टिसंगल॥अकेनहंशिलारघुनाथ॥अणोद्वेवि
 अर्थनिवेडिता॥७८॥पुखिशिपुखिबाधारा॥निडाशिवअथतरवरा॥उराभग्रिधसावरा॥उत्कालगिंपि
 डितसे॥७९॥निवेडेनियायथार्थवेकारा॥रामउकारिदंतमंदिरा॥अणोहग्रिधचंडाक्येरा॥याशिबधि
 मिबाला॥८०॥वाणकाठिललयक्षणि॥लोणजलेतेथेबाकाशवाणि॥अणोहरामकेदंडुपाणि॥याशिनमा
 रिंसर्वथा॥८१॥हापुर्विमुपलिज्जमदत॥गौतमद्रुषिचबिंदित॥तोयाचियासदनबिकस्माल॥मोजनबा
 लागेलमद्रुषि॥८२॥तयासथेणमासवीढेल॥दिवलंगुरचंमनसोभिलें॥ताकाळयाउगिंश्रपिलें॥

6

श्रीरामा ॥
११५८१

अथ हे ईश्वरो नियां ॥ १३ ॥ मग हाता गला गुरुचे करिणि ॥ उवापवो लगे तम मुनि ॥ राम दर्शन हे तांत त हीणि ॥ जा
 शि उधरे न स्वर्गांत ॥ १४ ॥ बैशे देव वाणि बो लता ॥ तें विमान ओले जक स्मात ॥ दिये देह पावला ब्रह्म हत ॥ का
 वें न मित राम चंद्रा ॥ १५ ॥ स्वर्ग नियां का हे उपाणि ॥ ताका केव सत विमानि ॥ रघु विरप्र तोपें कर नि ॥ स्वर्गि सु
 खि राहिला ॥ १६ ॥ असो कलशो इवाचेना चमशि ॥ येता जाला अयोध्या वाशि ॥ साष्टंग न मुनि ऋषि शि ॥ राध वउ
 प्रा ॥ राहिला ॥ १७ ॥ बहु लक सन बाहर ॥ आश्रमि पुजिल रघु विरा ॥ हस्त वं कृण सुंदर ॥ ऋषि ने दिये लं राध वा ॥ १८ ॥
 पृथ्वि चं मोल संपुर्ण ॥ येक येक जड ले रन ॥ तें शिवा वल्लभें हे शान ॥ घटोत्तवा प्र नि पुसे ॥ १९ ॥ ह्मणे यशि नि मि
 ता चतुरानन ॥ स्वर्गि धि वस्तु हे प्र मा धन ॥ मनु ज्य शि दु र्ज प्र पुर्ण ॥ तुम शि कै शि ता धि ला ॥ २० ॥ मग भग स्ति क
 घासांगत ॥ पै लते सरो वरि पा हे प्रेत ॥ हो वेद भेद शि चानु पनाथ ॥ पुष्प वं तत पो रा शि ॥ २१ ॥ दाने केलि अ पर
 मित ॥ रामा त पहि जा चर ला बहु त ॥ परि बन्न दान दिंचित ॥ घट ले न हि या पा सु न ॥ २२ ॥ स्वर्ग सि गे लानु प
 नाथ ॥ परि रघु धे ने पी ड ले असत ॥ मग तया शि ह्मणे प ३ अजात ॥ ना हि प्र द्या र्थ तु ज ये ये ॥ २३ ॥ ६१ ६१ ॥

॥ विजय ॥
११५८१

60

तुवांकेलेनाहिं बब्बदान ॥ येथेनपविजेद्विधन्नाविण ॥ तरितुं सुतकप्रतिजाउव ॥ आपलेप्रेतमहिंकां ॥ १५४ ॥ तु
 प्रसिंतांनित्यकाक ॥ मांसवाढतपैबहुसाल ॥ मगविमनिवैसोबभुपाका ॥ नित्यकाकयेततेथे ॥ १५५ ॥ अपुठेप्रे
 लमहुन ॥ स्वर्गाशिजालपरतेन ॥ अंबोदकायेवेडंदाना ॥ हुजेनाहिरावेवेडा ॥ १५६ ॥ माग्येतेवैराग्यनिश्चित ॥
 देवतयेकसद्गुतनाथा ॥ शांतिसुखाहुनअरुता ॥ हुजेसुखनमेवि ॥ १५७ ॥ विधिमाजिदादृशिप्रेथा ॥ किमंत्रात
 गरित्रीवरिथा ॥ किनिर्थांमाजिसुमटा ॥ प्रगराजपारवेता ॥ १५८ ॥ तेसेदानामाजिबब्बदान ॥ राधवाजसत
 श्रेष्ठपुर्ण ॥ असोव्यारायशिकुमकासन ॥ वेळताजाविकाकि ॥ १५९ ॥ ह्येअगस्तिच्यदर्शने ॥ तुसेंकर्मस्व
 उठगहन ॥ तोयेकेद्विशियेउन ॥ प्रेतमसितनुपवरा ॥ १६० ॥ तेम्याअकस्मानेदृरिक्ले ॥ ह्येनेहृदयममद्रव
 ले ॥ मगम्यातयाशिवरदानद्विधले ॥ कर्मस्वउलेतयाचे ॥ १६१ ॥ मगलोवैदृर्भराजतेथुन ॥ करिस्वर्गिअसुतपान ॥
 तेषंगुरपुजेशिपुर्ण ॥ मजेहंकंकुणसमपिले ॥ १६२ ॥ देवांचेऔशरत्नावरि ॥ चिंतितमनोरथसिध्यकरि ॥ ने
 सेअैकानअयोध्यविहारि ॥ घालिकरिंकंकुणाले ॥ १६३ ॥ राधकप्रणेत्रुषि ॥ दंडकारण्यहृणतियाशि ॥ याचि

8

श्रीराम ॥
॥६४॥

पूर्वकथा आह वैशि ॥ तमजपशिंसंगिजे ॥ १४ ॥ अगस्तिवहो मित्रकुण्डिदेखा ॥ मनुचापुत्र ईशुवाक ॥ तयात्रापुत्रदं
 उक्त ॥ रावनिघालामुगयेशि ॥ १५ ॥ लेकाननिद्रुषिआश्रमबहुत ॥ दंडकजथपाहलपाहात ॥ तोंशुगुचेंआश्रमद
 रवत ॥ शोभिवंतनसंतजो ॥ १६ ॥ तेषंराववैसलासुगमरि ॥ तोंशुगुनवतामंदिशिं ॥ धरिंतयाचिदोतिकुमरि ॥
 अरजानामितियेत ॥ १७ ॥ हेस्केनियायेकांला ॥ कामसुरलेनपनाथ ॥ परिवाकाअसेजमुक्त ॥ दशार्षिकु
 मारिका ॥ १८ ॥ दंडकंधतनियंवेकं ॥ ऋषिकुनेप्रतिपेगि ॥ शेरिरतिचेंनचतनपीडलें ॥ दंडकगेततियुनि
 ॥ १९ ॥ शुरुआश्रमशिआलावरित ॥ हेस्केबुंब्यापडविमुडित ॥ ऋषिवातासांगतिसमस्त ॥ दंडकंबनर्थ
 केलाहा ॥ २० ॥ ऋषिहोअलाजैसाद्युतांत ॥ दंडकाशिंनकांआपदेत ॥ स्पणसेनाप्रयोदशसमस्त ॥ वने
 पहणेंसहितपै ॥ २१ ॥ वृक्षतुणतोयधान्य ॥ लुश्यावैशासहितप्रधान ॥ वांउठाआयअश्रोन ॥ ससिदिन
 नलगतां ॥ २२ ॥ जैसेबोलतंविप्रालम ॥ सर्वहितेकांजालेअस्म ॥ नाहुउरलेदृष्टाचेंनाम ॥ पक्षितोयक
 चेंमग ॥ २३ ॥ बहुतकाळपरियंत ॥ मुन्यदेशपडलासमस्त ॥ पुढेनारदंकुठहबहुत ॥ पर्वतामजिलाविला ॥ २४ ॥

॥विजय॥
॥६५॥

श्रीराम

॥७॥

७४

रघोत्तमकैले ॥ मत्स्यपुत्रमाघारेखणिले ॥ यशाचेपर्वतउंचावले ॥ मेरुहुनबागळेबहु ॥ २५ ॥ मुक्तमंजुपिरघुना
था ॥ शोभलातेकांजानकिसहित ॥ भावतेबंधुतिष्ठत ॥ पुढेंहुनमंतउभाजसे ॥ २६ ॥ रामविजयग्रंथपावन ॥
उतरकांडसुरसगहुना ॥ पुढेंनिजधामागेतारघुनंदा ॥ हेजनुसंधानववर्णवे ॥ २७ ॥ लोंघ्यानिप्रघटोव
रघुनाथ ॥ अयोधेधुनग्रंथकरिसमास ॥ अवलारसंपत्ताहंचरित्रा ॥ रामविजईनसांगावे ॥ २८ ॥ मिजन्म
मरणाविरहित ॥ अनामअमंगअव्ययशाश्वत ॥ तौविमिब्रह्मानंदपंढरिनाथ ॥ भिमालटिउभाजसे ॥ २९ ॥
टाक्रेनियांचापशरा ॥ दोन्हीजंघनिठेउनिकरा ॥ समपदसमनेत्रा ॥ उभासादरमियेथे ॥ ३० ॥ अशिबाजां
हेतांसाचार ॥ श्रीधरेंघातलानमस्कारा ॥ क्रानियाजयजयकारा ॥ रामविजयसंपविला ॥ ३१ ॥ चळिस
आध्यायग्रंथतवता ॥ तुजप्रतिपावोपंढरिनाथा ॥ ब्रह्मानंदपदयेइता ॥ विश्वंमरिताजगहुता ॥ ३२ ॥
वाल्मीकिभृत्यमुबग्रंथा ॥ हुनुमंतकाव्यगोडवहुता ॥ बाणिग्रंथिससवतिसुना ॥ रामकथाबोळिता ॥ ३३ ॥
तैथिचिसमतेघेउनि ॥ पंढरिनाथेंद्रुपाकरनि ॥ संगितलेयेउनिकर्णि ॥ तैविलिहिलेसाक्षेपें ॥ ३४ ॥

॥विजयि॥
॥७॥

८

मेरुजापि विंध्याचक ॥ उंचावकेमांडलिसबक ॥ खोकं बलेंसुर्यमंडक ॥ ऋषिसककहुडबडिले ॥ १५ ॥ विंध्यदिना
 टोपेसाचार ॥ सुर्याविणपडलाअंधःकार ॥ मगमिक्केन ऋषिनिर्जर ॥ मजप्रतियेउनमार्थिति ॥ १६ ॥ तुजवंचुन
 विंध्याचक ॥ नाटोपेकेणशिखक ॥ तुंददृष्टणेशिजाईनालाक ॥ तिर्थयात्राकराक्या ॥ १७ ॥ मगवराणशिर
 कुंनतालाक ॥ दृष्टणेशिजाला ऋषिसहित ॥ मजदृष्टतां विंध्यादिपर्वतपडता ॥ पृथिवीरिजाउवा ॥ १४ ॥ त्याशि
 मिबोलिलोवचन ॥ जेमिमाधारायंपरतोन ॥ तेकरिसुठे वियेथुन ॥ नाहिलरिआपिनसुणार्थ ॥ १३ ॥ तेहुंद
 कारण्यवोस ॥ ऋषिसहितकेलाम्यावास ॥ ईद्राशिमागोनबहुवसा ॥ मेघट्टिद्वरविलि ॥ २० ॥ आपद्याकंप
 वत ॥ अद्यापिनउठेचियेथार्थ ॥ मगउगवलाहिल ॥ दोषदुकाकनिमाला ॥ २१ ॥ आणिकथनथान्येव
 हुत ॥ लेहिवर्षलाजिमरनाथ ॥ मगहुदेशवसलाअजुन ॥ लोत्रसमस्तसुखिजाले ॥ २२ ॥ तैपासुनहुंडका
 रण्य ॥ राधवप्रणतियालागुन ॥ असोयविरिजाजाधेउन ॥ स्थुनहननिघाला ॥ २३ ॥ पुष्यकासठरदु
 खिरा ॥ अयोधेशिपाललासवर ॥ लोत्रुषेश्वरधेउनकुमरा ॥ रामदर्शनपातले ॥ २४ ॥ क्षणतिथन्यथन्य

रामविजयवरदग्रंथ॥ कर्तायात्वापंठरिनाथ॥ श्रीधरनामहंनिमित्त्य॥ पुठंकेलेउगेत्ति॥ ३५॥ याग्रंथाशिवरदान॥
 पंठरिशोद्विधेलेजापण॥ वाचिलिपठतिअनुदिन॥ होयज्ञानअस्तु॥ ३६॥ वेडवेलेसंकरमाहविद्य॥ तरि
 येकरुरितांजावर्तन॥ ताकाकजईलनिरसेन॥ संनविसंपतिपूर्णपावेला॥ ३७॥ पंचजावर्तनेकरितांजाण॥
 जातिमाहव्याधिपकेन॥ अहोईहोतकृष्णाया॥ सत्यसत्यवचनविधरिं॥ ३८॥ होउनियंशुचिर्मत॥ दाहाजा
 वर्तनेकरितांयथार्थ॥ तरिपोटिहोईलद्विव्यसुत॥ अथुनकमकप्रतापि॥ ३९॥ जरिनकेंपठणश्रवण॥ तरि
 नित्यकरितांग्रंथपुजन॥ तरित्याजेसंकरदपूर्ण॥ इत्युनयेउनवारिलपै॥ ४०॥ अद्यापिचिरंजीवजाहुरु
 मंता॥ जरधुनाथकथावाचिलिमत्त॥ त्रिजिंलवास्त्ररक्षित॥ उभातिष्टलत्यायशिं॥ ४१॥ करितांरामक
 थाश्रवण॥ सप्रेमेहोठवायुनंदन॥ ग्रंथवचित्यापुठयेउन॥ क्रस्जेहुनउमबिस॥ ४२॥ निर्मळमावधरोनि॥
 रामविजयउसांचालेनि॥ जिद्राकरितांविस्वभि॥ मसलिदर्शनहेतुपै॥ ४३॥ जैसाग्रंथाचत्वमकार॥ जा
 णतिरामउपासकर॥ अथिअधिदुःखहीरद्र॥ जायसर्वत्रसंयहितं॥ ४४॥ वाककांडजाठनाध्यायवरी॥

श्रीराम॥

॥८॥

९

अयोध्याकांडभाष्यायचरि॥ अरुच्यर्थनिर्घारि॥ अरण्यकांडप्रवेड॥ ४५॥ होनभाष्यायक्रिस्किंदाकांडा॥
तेथुनपांचभाष्यायवितंडा॥ तेंसुंदरकांडगेडा॥ लिळाचरित्रंमारुतिवि॥ ४६॥ द्वाहिभाष्याईनिपुण॥ शुभकां
उरसपान॥ ससभाध्यायरत्नखाण॥ उतरकांडजाणवे॥ ४७॥ बैस्यंभाष्यायउवधेचवळिस॥ मिठेनिरा
मविजयसुरसा॥ श्रवणकरितांप्रभास॥ ब्रह्मनदउचवठ॥ ४८॥ प्रथमेध्याईमंगळाचरणा॥ गणेशसरस्व
तिकेंस्तवन॥ वाभिक्रुत्विउत्पतिसांगोन॥ प्रथमभाष्यायसंपविला॥ ४९॥ बंधुसमवेतनिश्चिति॥ सांगित ॥ विजय
लिरावणाचिउत्पति॥ ह्शरथसंभ्राचिगति॥ द्वितीयाध्याईनिरोपिलि॥ ५०॥ श्रावणवधश्रुंगिचेंआगमना॥ ॥८॥
यागह्शरथेकेलापुर्ण॥ त्यावरिहनुमंतकथन॥ त्रितीयाध्याईद्वयाहेचि॥ ५१॥ कौशल्यासुमित्राकैकेप्रति॥
डोहकेपुसालागलानुपति॥ श्रीरामध्यानजन्मस्थिति॥ चतुर्थेध्याईद्वयाहेचि॥ ५२॥ श्रीरामाचेंमुंजिवंध
न॥ ब्रह्मचर्यतिथीरण॥ विश्वामित्रमागेरधुनंढन॥ हेचनिरापणपांचव्यात॥ ५३॥ ताटिकांमर्दुनरक्षितया
गा॥ अहिभोधारणपुढसांग॥ शितवज्रसंगिललाप्रसंग॥ साहायालसातव्यांतनिश्चेति॥ ५४॥

११

वि

रुन

आठवियामजिश्चितासैकरा॥अपमानिलादशकंदर॥लनलागेलंजिक्किलाफुरशधर॥आतारधुविरबयो
 ध्ये॥५५॥राजिबैसतारधुनाथ॥कैकैनेकैलअनर्थ॥सकुरितांदुःस्वितदशस्थ॥नवावनिश्चितेहचिकथा॥५६॥
 श्रीरामवनवशिनिघाला॥कैइलिनेशोककेवा॥जाकैरिशिबाला॥दशमामजिहेचिकथा॥५७॥दशर
 थेंसागिताप्राण॥अरथआतामसुकिंहुन॥अकिरसदिव्यनरोपण॥गेडबहुतकरावा॥५८॥चित्रकुटिमेट
 लारधुनंदन॥अरथेंकेलेबहुतसवन॥नेदियमिंपरस्वायुना॥हेचिकथनबाराका॥५९॥बहुतत्रुपिचे
 दर्शना॥चेतजालारधुनंअगस्तिवामहिमापुण॥लेकवेयांलकाथेयला॥६०॥शुर्पनरेवेचंविटंबन॥वधिला
 शिशिरारवरदुरपण॥दशमुखशिककलेवतम॥हेचिकथनचौदावा॥६१॥मगवधुंगेलारधुनंदन॥शिता
 धेउनगेलारावण॥अटायुवधिलाकपेटंकन॥पथरायातकथाहवि॥६२॥शितविरहेरामआपिला॥साव
 रिजटायुउध्यरिता॥पंपासरोवराप्रतिबाला॥सोळावाजालालेथुनियं॥६३॥वाकिसुग्रिवांचिउत्पति॥
 मगशक्रसुतवधिरधुपति॥सत्रावेवाध्याईनिश्चिति॥कथाहेचिरसाठ॥६४॥तारेप्रतिबोधकन॥शुधि

श्रीरामं

॥१९॥

10

सगेलेवाब्जगण॥ समुद्रतिरिसंपालिदर्शन॥ हेचिनिरोपणबठरावा॥ ६५॥ समुद्रलंघनलंकाशोधुन॥ राव
 षसमाविटंबुन॥ विजईजालावायुनंदन॥ हेचरित्रपूर्णयेकुणिसवा॥ ६६॥ हुनुमंताशिआनकिदर्शन॥ वि
 ध्वंसिलेजशोकवन॥ वधिलजस्वयभाणिरक्षिसपूर्ण॥ हेचिकथनविसाव्यांत॥ ६७॥ ईडजिलत्वेविटंबुन॥
 रावणपुत्रकुनकेलेलंकादहन॥ किस्किंदेशिजालाजंजनिपुन॥ हेचिकथनयेकविसावा॥ ६८॥ ब्रह्मपत्रवाचुन॥
 समुद्रतिरालारघुनंदन॥ विभिषणबोधिलरवण॥ हेचिकथनवविसावा॥ ६९॥ विभिषणभेटरामाशि ॥ विजय
 येउना॥ सागरदर्शनधेतुबंधन॥ सुवेकेशिनाला ॥ विजय ॥ १९॥
 भाटाकेउपरिवरि॥ सुगिंवउडेनसात्तामुगुटीविदारि॥ श्रीरामबहुतनाश्चिर्यकरि॥ हेचिकथनचेविसावा॥ ७०॥
 जगदबाधुगेलारावण॥ अपारयुध्यकेलंकारण॥ नागपाशिबांधिलरामलक्ष्मण॥ हेलिकापूर्णपंचविसावा॥ ७१॥
 प्रहस्तमंदाहरिनिति॥ मगयुध्यशिआलालंकापति॥ लोफरावावपावतानिधीति॥ हेचरित्रसविसावा॥ ७२॥
 जागकिलकुंभकर्ण॥ त्यावरियुध्येजालंकारण॥ समरिघटआत्रेद्विथलाप्राण॥ हेचनिरोपणसत्तविसावा॥ ७३॥

नरांनकादिसाहाजणपडिले ॥ शक्यजितेंशरजाबघावले ॥ मारतिद्रोणाचकबाणिलेतेवेके ॥ बगविसाव्यांतहे
 चिकथा ॥ ७५ ॥ निकुं वकेशिजाउन ॥ वाळरिंहोमविध्वंसुन ॥ शक्यजितशिमारिलक्षुमण ॥ यकुणतिसाव्यांतहे
 चिकथा ॥ ७६ ॥ तिसावासुलोचनागहिवर ॥ येकदिसाविकुंमहिंसंकार ॥ शक्तिभेदनिर्धार ॥ वेतिसावसंपु
 र्णपै ॥ ७७ ॥ रावणाचाहोमविध्वंसुन ॥ अपारमांजविलंतेंकारण ॥ रावणवधुनस्छापिलाविभिषण ॥ हेचि
 कथनतेहेतिसावा ॥ ७८ ॥ जानकिनेदिव्यघेउन ॥ वर्षलावामुसपर्यन ॥ देवस्वस्छकागेलस्तउन ॥ हेचिकथावि
 पुनवेतिसावा ॥ ७९ ॥ पुष्पकिकैसेजरघुनदन ॥ घतलेभगतिचेंदर्शन ॥ त्यावरिभरथभेविपुर्ण ॥ हेचिरत्र
 कथनपस्तीसावा ॥ ८० ॥ नदियामिसहिताराधवसा ॥ नराकेलबियोध्याप्रवेश ॥ राजिंस्छापुनरामास ॥
 वाळरगलेस्वस्छाना ॥ ८१ ॥ छतिसावकाध्याईजाण ॥ हेचिकथाबसपरिपुर्ण ॥ त्यावरितिनबाध्यथको
 लुकगहन ॥ लडुकुशबारव्यानगोडपै ॥ ८२ ॥ वाठिसाव्यांतस्छुविरं ॥ मसपवलेत्रुषिचेकुमरा ॥ तेकिरा
 तवधुनसत्वर ॥ माधैरेसर्वबाणिले ॥ ८३ ॥ वाठिसबाध्यथपर्यंत ॥ रामविजयपुर्णत्रंथ ॥ श्रवणमननें
 पुस्कार्त ॥ जाणतिपंडितेवेवीके ॥ ८४ ॥ रामविजयत्रंथन्यपति ॥ वाठिसबाधारविरनिम्बिति ॥ दोषदृष्टा

श्रीराम ॥
१९० ॥

(4)

तें संकरिति ॥ प्रचंडपुरुषार्थिविरहो ॥ ८५ ॥ किं रामविजयसुंदर ॥ हें वाकिसखणावे गोपुरा ॥ शिंमसीहृत्तरघु
 विरा ॥ किं उकरितयावीरा ॥ ८६ ॥ किं हें वाकिसखणावे हें दान ॥ रघुनाथनाम तुकशिपुर्ण ॥ दिष्टं तत्ते त्विपत्रे जा
 णा ॥ अवर्तनप्रदक्षणा मत्करिति ॥ ८७ ॥ रामविजयग्रंथमंदिरा ॥ चळिसकोठ्याबतिसुंदरा ॥ साहित्यद्र
 येनपारा ॥ मजिमरेलेनगणवे ॥ ८८ ॥ किं वाग्रंथहावासरमपि ॥ वेष्टिलाअसे दिष्टं तत्किणि ॥ किं साहित्येना
 रांगणि ॥ ग्रंथचंद्रवेष्टिला ॥ ८९ ॥ किं ग्रंथहाविरघुविरा ॥ इष्टानहत्याचेवाब्बर ॥ मस्तनबहुं ह्साकंदरा ॥ वि
 जयसुपसर्वदा ॥ ९० ॥ रामविजयमादुसवार्गळि ॥ अंत आहूनचळिसकोठळि ॥ नवरसपुर्णद्रव्यसुक्राळि ॥
 मजदियलिन्रमानंदे ॥ ९१ ॥ पकालेभवदुःखदीरदा ॥ शिंपाप्यबालेनपारा ॥ किं ग्रंथपंडरपुरनगरा ॥ इष्टं
 त्समग्रयात्रालेथे ॥ ९२ ॥ रामविजयरत्नखाणि ॥ वेष्टिलाग्रंथव्यजलिचणि ॥ ब्रह्मानंदल्लुपेकरनि ॥ ग्रंथ
 शिथ्यजाहाला ॥ ९३ ॥ इष्टं ग्रंथज्ञानसमुद्रा ॥ पुर्णपर्वणिजचकअद्रा ॥ श्रानारघुविरनरेद्रा ॥ आलेन्रत्नवजा
 लेपे ॥ ९४ ॥ आनंदसांप्रदायपुर्ण ॥ वाढलआलेसुकिंचेज्ञान ॥ श्रुष्टिचेअग्रिकमअसन ॥ उपदेशिला
 नारायणे ॥ ९५ ॥ कमकोद्रवेलेचिज्ञान ॥ अत्रिसद्विधलेसन्माने ॥ त्याचिपोटिबाह्विपुनषजाण ॥ दत्तात्र
 यअवतरला ॥ ९६ ॥ दत्तात्रयज्ञानशिथ्या ॥ सांगेनवेथिलासदानंद ॥ तेथुनरामनंदप्रशिथ्या ॥ यलेश्वरखगाथपे ॥ ९७ ॥

विजय
१९० ॥

119

119/11180

तेद्युनजमलानंदयतेश्वरा॥गंगिरानंदज्ञानद्विाकर॥सहजानंदयोगेश्वर॥कृष्णापाधामवशिजो॥१५॥
 तेद्युनपुर्णानंदमाहायतिराज॥तोज्ञानतेजंसुतेजा॥तेद्युनदतानंदयतिसहज॥पुर्वदत्तचक्रवतरता॥१६॥
 त्यादत्तात्रयत्वेउदीरसहजशुभ॥पुर्णवतरताब्रह्मानंद॥पिताबाप्पिगुरुप्रसिध्द्य॥तोचिमाज्ञाजाणि
 जो॥२००॥पंढरिहृनिचरियोडनंदरी॥नैश्वर्यकोनिवाशेरनगरि॥तैथिलेशलस्ववधारी॥ब्रह्मा
 नंदपुर्वाश्रमि॥१॥मगपंढरिसभयेउनि॥विधिब्रह्मव्यासग्रहणि॥ब्रह्मादिभिमातिरिसमाधिस्त
 संपब्धी॥ब्रह्मानंदयतिरावा॥२॥तोब्रह्मानंदपुर्णपिता॥सावित्रिनाभमाशिमात्ता॥तेभावेवंदुनिउभ
 यतां॥रामविजयसंपविला॥३॥शं॥१६॥२६॥३६॥४६॥५६॥६६॥७६॥८६॥९६॥१०६॥११६॥१२६॥१३६॥१४६॥१५६॥
 सुधैद्विस॥श्रावणमासविरव्यात्तपो॥६॥पंढरिद्वित्रिनिश्वयेशिं॥ग्रंथसंपविलातेचिदिवसिं॥लेख
 कृष्णाणिश्रोतयांशिं॥कृष्णाणबसोसर्वदां॥५॥सुभानुसंवत्सरआनुवार॥भानुवोशिउपजलार
 द्युविरां॥भानुबाणिरोहिणिवरा॥तोवरिग्रंथबसोहा॥६॥ब्रह्मानंददापांडुरंगीश्रीधरवरदापुर्णब्रह्मं

शो

राम ॥ गा ॥ पुराण पुरुषामकभवमंगा ॥ चरणिचंद्रमागावाहेलुश्या ॥ ७ ॥ शके १७०६ क्रैथिन मसंवत्सरे ॥
११ ॥ लिखितं धोडोशामसुत ॥ मासे फाल्गुन शुद्ध अष्टमि ॥ समासे केलाबुर्बाडि ॥ ८ ॥ रामविजय ग्रंथ
सुंदर ॥ समतवाल्मीकिनाटकाधार ॥ सदां परिमोसिमकचतुरा ॥ चरित्रावलाध्यायगोडडा ॥ २०९ ॥
इंदुपुस्तकबाबशेटहरशेटगांदीशेलेपेटजीवापुरजंजिरेरनागिरीशंतराजापुरकयातनकर

12



॥ विजय ॥
॥ १९११ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com